अध्याय
01

फ्रांसीसी क्रांति

© JCERT not to be republished

सीखने का प्रतिफल-विद्यार्थी फ्रांस की क्रांति के कारणों परिणामों और महत्व को समझ सकेंगे।

1. परिचय
2. फ्रांस के राजा लुई 16 के शासनकाल में पेरिस के पूर्वी भाग से फ्रांस की क्रांति की शुरुआत हुई थी।
3. फ्रांस की आम जनता महंगाई से त्रस्त थी और उन्हें खाने के लिए रोटी भी नहीं मिल पा रहा था।
4. इसी दौरान यह अफवाह फैली की फ्रांस का राजा पेरिस में सेना को प्रवेश करने का आदेश दे दिया है तथा जल्द ही आम जनता पर गोली चलाने का आदेश देने वाला है।
5. इस घटना से पेरिस में 7000 स्त्री -पुरुष टाउन हॉल में एकत्रित हुए और एक “जनसेना “गठित करने का निर्णय लिया। जन सेना में शामिल लोग हथियार एकत्रित करने लगे।
6. सैकड़ों लोगों का एक जनसमूह पेरिस की और बढ़ने लगा और पेरिस के पूर्वी भाग में पहुंचकर देखते ही देखते बास्तील के किले को तोड़ डाले। यह घटना 14 जुलाई 1789 को घटी थी
7. बास्तील के किले में कैद क्रांतिकारियों को जनसेना ने आजाद करा दिए। यह किला फ्रांस के राजा के शक्ति का प्रतीक था। अतः फ्रांसीसी इस किले से घृणा करते थे।
8. 1793 ईस्वी में फ्रांस के राजा लुई -16 वा को जनता ने पकड़ कर कैद कर लिया और असेंबली के अनुमति से उसे गिलोटिन पर चढ़ा दिया गया और फ्रांस की क्रांति का अंत हो गया।

फ्रांस के उभरते मध्यमवर्ग ने विशेषाधिकार के अंत की कल्पना की

1. फ्रांस में उभरता मध्यमवर्ग
2. 18 वीं सदी में फ्रांस का समाज तीन भागों में बांटा था-

   प्रथम इस्टेट, द्वितीय इस्टेट और तृतीय इस्टेट। प्रथम इस्टेट में पादरी वर्ग, द्वितीय इस्टेट में कुलीन वर्ग और तृतीय इस्टेट में जनसाधारण वर्ग शामिल थे।
3. जनसाधारण वर्ग में किसान, मजदूर, व्यवसायी, शिल्पी ,दार्शनिक ,विचारक, लेखक, कवि, चिकित्सक, इंजीनियर और साहित्यकार शामिल थे।

फ्रांस की क्रांति

कब – 1789

कहाँ – फ्रांस (यूरोप)

राजवंश– बूर्बो वंश

राजा– लुई–16वाँ (शासन काल – 1774 – 1793)

रानी– मेरी एन्तोएनेत (ऑस्ट्रिया की राजकुमारी)

कारण

- **सामाजिक**
  - प्रथम इस्टेट – पादरी वर्ग (चर्च में धार्मिक कार्य)
  - द्वितीय इस्टेट – कुलीन वर्ग (शासन के उच्च पद पर)
  - तृतीय इस्टेट
    - किसान (फ्रांस की 80 प्रतिशत जनसंख्या)
    - मजदूर
    - शिल्पी, व्यापारी एवं व्यवसायी
    - शिक्षित मध्यम वर्ग
      - दार्शनिक (विचारक)
        - रुसो – पुस्तक – सोशल कॉंट्रेक्ट – कथन – शासक को जनता के प्रति उदारवादी होना चाहिए
        - वाल्टेयर – चर्च एवं राज्य की बुराई की आलोचना कथन–शक्ति जनता के हाथ में हो। सिद्धान्त–आत्म निर्णय का सिद्धान्त
        - मांस्टेस्क्यू – पुस्तक – स्पिरिट ऑफ लॉज – शक्ति के पृथ्थकरण सिद्धान्त – विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका
      - साहित्यकार
      - चिकित्सक
      - इंजीनियर
- **राजनीतिक**
  - निरंकुश, भ्रष्ट एवं अत्याचारी राजा का शासन
  - लुई 14वें कमजोर एवं युद्ध में विश्वास करने वाले उत्तराधिकारी
  - सभी उच्च–प्रशासनिक पदों पर कुलीन व्यक्ति की नियुक्ति
- **आर्थिक**
  - दोषपूर्ण एवं असमान भूमि वितवरण
  - कर का बोझ किसानों के उपर
  - कुलीन वर्ग तथा पादरी वर्ग से कर नहीं वसूलना
  - राजा द्वारा युद्ध एवं सीमा विस्तार में व्यय
  - रोजपरिवार के द्वारा फिजुलखर्ची

© JCERT not to be republished

4. दार्शनिक, विचारक, लेखक, कवि, साहित्यकार और चिकित्सक उभरते शिक्षित मध्यमवर्ग के सदस्य थे।।

5. फ्रांस में पादरी वर्ग और कुलीन वर्ग को विशेषाधिकार प्राप्त था और ये लोग किसी प्रकार का कर राज्य को नहीं देते थे। जबकि जनसाधारण वर्ग को विशेषाधिकार से वंचित रखा गया था तथा यह वर्ग कर के भार से दबा हुआ था।

6. शिक्षित मध्यम वर्ग में शामिल दार्शनिक, विचारक, लेखक और कवि ने कुलीन एवं पादरी वर्ग के विशेषाधिकार का विरोध किया और अपनी लेखनी के माध्यम से फ्रांस के लोगों को जगाने का काम किया।

7. मांटेस्क्यू अपनी पुस्तक" एस्प्रीट ऑफ लॉज " में शक्ति के पृथक्करण का सिद्धांत दिया है।

8. शक्ति के पृथक्करण सिद्धांत के अनुसार कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका शक्ति तीन व्यक्ति के हाथ में होना चाहिए जबकि फ्रांस में राजा के हाथों में ये तीनों शक्ति होने से राजा निरंकुश हो गया था।

9. लॉक ने राजा के देवी अधिकार का खंडन किया है और फ्रांस के राजनीतिक संस्था की आलोचना की। वाल्टेयर चर्च और राज्य की बुराई की आलोचना करते हुए कहा की शक्ति जनता के हाथों में होनी चाहिए।

10. फ्रांसीसी विचारक अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम से प्रभावित थे और अमेरिका में मिले मौलिक अधिकार की बात करते थे।

11. फ्रांस के राजा की निरंकुशता एवं पादरी वर्ग और कुलीन वर्ग के विशेषाधिकार के खिलाफ आंदोलन की जमीन शिक्षित मध्यम वर्ग ने तैयार कर दी।

12. इस प्रकार हम कह सकते हैं कि फ्रांस में शिक्षित मध्यम वर्ग नहीं होता तो फ्रांस की क्रांति नहीं होती।

फ्रांस की क्रांति की शुरुआत

1. फ्रांस की क्रांति की शुरुआत
2. लुई सोलहवां का राजकोष खाली हो चुका था और वह नया कर जनता पर लगाना चाहता था ।
3. प्राचीन फ्रांसीसी राजतंत्र के तहत राजा स्टेट्स जनरल के अनुमति से नया कर लगा सकता था।
4. स्टेटस जनरल एक राजनीतिक संस्था थी जिसमें तीनों इस्टेट के प्रतिनिधि शामिल थे।
5. स्टेटस जनरल के बैठक बुलाने का अधिकार राजा को था।
6. 5 मई 1789 को राजा ने नए कर के प्रस्ताव के मंजूरी के लिए स्टेट्स जनरल की बैठक बुलाई।
7. यह बैठक वर्साय के महल में बुलाया गया, जिसमें 300-300 प्रतिनिधि पहला और दूसरा वर्ग से शामिल हुए।
8. एक प्रतिनिधि आमने-सामने की कतार में बैठाए गए थे।
9. तीसरे वर्ग के 600 प्रतिनिधि पीछे की कतार में खड़े किए गए थे।
10. तीसरा वर्ग के प्रतिनिधि समृद्ध और सुशिक्षित थे।

© JCERT not to be republished

11. किसानों महिलाओं और कारीगरों को स्टेट्स जनरल में प्रवेश वर्जित था।

12. स्टेट्स जनरल के नियम के अनुसार प्रत्येक वर्ग को एक-एक मत देने का अधिकार था।

13. लुई सोलहवां का कहना था कि प्रत्येक वर्ग को एक ही मत देना है। तीसरे वर्ग के प्रतिनिधि इस प्रस्ताव का विरोध किए।

14. तीसरे वर्ग के प्रतिनिधि विरोध जताते हुए स्टेट्स जनरल की बैठक से बाहर चले गए।

15. 20 जून को तीसरे वर्ग के प्रतिनिधि पर्साम के इनडोर टेनिस कोर्ट में जमा हुए।

16. टेनिस कोर्ट में जमा हुए प्रतिनिधि स्वयं को नेशनल असेंबली घोषित कर दिए।

17. टेनिस कोर्ट में जमा प्रतिनिधि राजा के शक्ति को कम करने वाला नया संविधान बनाने की मांग करने लगे।

18. मीराबो कुलीन परिवार का एक सदस्य था परंतु उसने तीसरे वर्ग की मांग का समर्थन किया।

19. मीराबो तीसरे वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए सामंती विशेषाधिकार वाले समाज को खत्म करने की मांग की।

20. नेशनल असेंबली नया संविधान बनाने में व्यस्त थी तो दूसरी तरह पूरा फ्रांस महंगाई से परेशान था।

21. पाव रोटी खरीदने के लिए बेकरी की दुकान पर महिलाओं की लंबी कतार लगी थी।

22. दुकान पर घंटों इंतजार के बाद जब पाव रोटी नहीं मिली तो क्रोधित महिलाओं ने दुकान पर हमला कर दिया।

23. पेरिस में जैसे ही राजा की सेना प्रवेश की जनता ने क्रोधित होकर बास्तील के किले को 14 जुलाई 1789 को तोड़ दिए और कैदियों को आजाद करा दिया। इसी के साथ फ्रांस की क्रांति की शुरुआत हो गई।

24. फ्रांस की क्रांति दुनिया में स्वतंत्रता समानता और भाईचारे की भावना का प्रचार-प्रसार किया।

फ्रांस में जीने का संघर्ष-

1. मांग की तुलना में अनाज का उत्पादन कम होना
2. दैनिक उपभोग में आने वाले वस्तुओं के कीमत में तेजी से वृद्धि होना।
3. मालिक द्वारा श्रमिकों को कम मजदूरी देना।
4. फ्रांस की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि।
5. सूखे और ओले के प्रकोप से अनाज उत्पादन में कमी।
6. फ्रांस में बरोजगारी तथा बेकारी की समस्या।

फ्रांस संवैधानिक राजतंत्र बन गया

1. अगस्त 1789 में लुई सोलहवा ने क्रांति के दौरान ही नेशनल असेंबली को मान्यता दे दी थी। नेशनल असेंबली ने पादरी वर्ग, एवं कुलीन वर्ग के विशेषाधिकार को खत्म कर दिया था।
2. सामंती व्यवस्था पर आधारित समाज को खत्म करने की घोषणा नेशनल एसेंबली द्वारा कर दी गई। नेशनल

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

© JCERT not to be republished

असेंबली 1791 ईस्वी में संविधान का प्रारूप तैयार कर लिया।

3. नेशनल असेंबली ने शक्ति को तीन भागों में विभाजित कर दिया-*विधायिका, *कार्यपालिका, *न्यायपालिका।

4. अब राजा के निरंकुश शासन को समाप्त कर फ्रांस में संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना कर दिया गया।

5. 1791 ईसवी में नेशनल असेंबली को कानून बनाने का अधिकार राजा ने सौंप दिया

6. नेशनल असेंबली अप्रत्यक्ष रूप से एक निर्वाचक मंडल द्वारा चुना जाता था। इस निर्वाचक मंडल का चुनाव फ्रांस के नागरिक द्वारा किया जाता था।

7. 25 वर्ष से अधिक उम्र वाले को सक्रिय नागरिक फ्रांस में माना गया और जो कम से कम 3 दिन की मजदूरी के बराबर कर चुकाते थे । अर्थात् फ्रांस में सभी नागरिकों को मताधिकार नहीं दिया गया।

8. महिलाओं एवं 25 वर्ष से कम उम्र के पुरुषों को मत देने का अधिकार नहीं दिया गया था।

9. संविधान पुरुष एवं नागरिक अधिकार घोषणा पत्र के साथ लागू हुआ।

10. जीवन जीने के अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार और कानून के सामने बराबरी के अधिकार को मौलिक अधिकार का दर्जा दिया गया और कहा गया कि इन अधिकारों को कोई छीन नहीं सकता।

11. फ्रांस में प्रत्येक नागरिक के अधिकारों की रक्षा करना राजा और राज्य का कर्तव्य माना गया।

फ्रांस में राजतंत्र का उन्मूलन और गणतंत्र की स्थापना

1. फ्रांस में नया संविधान 1791 ईसवी में बनना शुरू हुआ और 1791 ईसवी में ही बनकर तैयार हो गया। लुई सोलहवा ने उस संविधान पर हस्ताक्षर भी कर दिए।

2. लुई सोलहवां प्रशा के राजा से गुप्त वार्ता करके सैनिक सहायता की मांग की। इस घटना से फ्रांस के लोगों में राजा लुई सोलहवां और प्रशा से नफरत का भाव पैदा हो गया।

3. अप्रैल 1792 ईस्वी में नेशनल असेंबली ने प्रशा एवं ऑस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध का प्रस्ताव पारित कर दिया।

4. फ्रांस के हजारों युवक लुई सोलहवां एवं ऑस्ट्रिया के खिलाफ युद्ध में शामिल होने के लिए स्वयंसेवी सेना में भर्ती होने लगे।

5. कवि राजेट दी लाइल द्वारा रचित गीत "मार्सिले "लोगों द्वारा गाया जाने लगा। बाद में फ्रांस का राष्ट्रगान मार्सीले बना।

6. 1791 ई. के संविधान से केवल अमीरों को ही राजनीतिक अधिकार मिला।

7. फ्रांस में सरकार की नीतियों पर चर्चा के लिए कई क्लब बनाए गए, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण जैकोबिन क्लब था।

8. जैकोबिन दल के सदस्य जूता बनाने वाले, नौकर, मजदूर, घड़ीसाज इत्यादि थे। रॉबेस्पेयर जैकोबिन क्लब का एक सदस्य था।

© JCERT not to be republished

9. जैकोबिन क्लब के सदस्य धारीदार लंबे पतलून पहनते थे,ताकि कुलीन वर्ग से अलग दिखें। कुलीन वर्ग के लोग घुटने तक ब्रीचेस पहनते थे।

10. जैकोबिन क्लब के सदस्य लाल टोपी पहनते थे जो स्वतंत्रता का प्रतीक था।

11. 1792 ईस्वी की गर्मी में जैकोबिन क्लब वाले खाद्य पदार्थों की महंगाई एवं अनाज के कमी से नाराज थे।

12. नाराज पेरिस वासियों ने विशाल हिंसक प्रदर्शन की योजना बनाई। 10 अगस्त 1792 ईस्वी को क्रांतिकारियों ने राजा के महल पर हमला करके राजा को बंदी बना लिया।

13. शाही परिवार और राजा को जेल में डाल दिया गया और 21 सितंबर 1792 को फ्रांस में राजतंत्र का अंत हो गया। अब फ्रांस को गणतंत्र घोषित कर दिया गया।

फ्रांस में आतंक राज

1. फ्रांस में आतंक राज्य की स्थापना राबेर-पेयर द्वारा 5 सितंबर 1793 ई. को किया गया था। आतंक राज 5 सितंबर 1793 से 27 जुलाई 1794 ईस्वी तक फ्रांस में रहा था।

2. रोब्सपियरे नियंत्रण एवं दंड की सख्त नीति अपनाई। उसने गणतंत्र के शत्रुओं और क्रांति के विरोधियों को गिरफ्तार करके जेल में कैद करवा दिया।

3. जेल में कैद लोगों के खिलाफ क्रांतिकारी न्यायालय में मुकदमा चलवा कर और उन्हें दोषी घोषित कर गिलोटिन पर चढ़ा कर हत्या कर दी जाती थी।

नोट-राबेस्पेयर जैकोबिन दल का एक सदस्य था। जैकोबिन दल क्रांति का समर्थक था।

रॉबेस्पेयर के सुधार कार्य

1. कानून बनाकर अधिकतम मजदूरी और अधिकतम कीमत वस्तुओं के तय कर दिए गए

2. गोश्त और पावरोटी के राशनिंग कर दिए गए

3. सरकार द्वारा तय कीमत पर किसानों को अपनी अनाज शहरों में ले जाकर बेचने के लिए बाध्य कर दिया गया।

4. बोलचाल की भाषा और संबोधन में बराबरी का कानून लागू किया गया।

5. चर्च को बंद कर दिया गया और चर्च के भवन को सरकारी कार्यालय बना दिया गया।

6. सफेद आटे के इस्तेमाल पर रोक लगा दी गई।

नोट-जुलाई 1794 ईसवी राबेस्पेयर को न्यायालय द्वारा दोषी घोषित करके गिलोटिन पर चढ़ा कर हत्या कर दी गई।

डायरेक्टरी शासित फ्रांस

1. फ्रांस में जैकोबिन सरकार के पतन के बाद नए संविधान के अनुसार दो चुनी गई विधान परिषद का गठन किया गया।

2. विधान परिषद में 5 सदस्यों वाली एक कार्यपालिका बनाई गई, जिसे "डायरेक्टरी" के नाम से जाना गया! इसका गठन जैकोबिन सरकार के कमियों को दूर करने के लिए किया गया था।

© JCERT not to be republished

3. डायरेक्टरी 1795 में अपना कार्यभार संभाला।
4. डायरेक्टरी के कार्य-युद्ध या संधि करना, सेना के अध्यक्षों की नियुक्ति करना और सेना पर नियंत्रण रखना।
5. डायरेक्टरी एवं विधान परिषद के बीच झगड़ा होने लगा। विधान परिषद डायरेक्टरी को बर्खास्त करने की कोशिश करने लगा।
6. डायरेक्टरी के असफलता के कारण- डायरेक्टरी के सदस्यों के पास योग्यता और अनुभव की कमी तथा भ्रष्ट शासन।
7. डायरेक्टरी की राजनीतिक अस्थिरता ने नेपोलियन बोनापार्ट जैसे सैनिक तानाशाह को जन्म दिया।
8. फ्रांस में इस दौर में राजनीतिक परिवर्तन होते रहे परंतु समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे की भावना फ्रांस में बढ़ती रही।

क्या फ्रांस में महिलाओं के लिए भी क्रांति हुई थी

1. क्रांति के पहले फ्रांस में महिलाओं की दशा
2. तीसरे स्टेट की अधिकांश महिलाएं सिलाई, बुनाई, कपड़ों की धुलाई, फल एवं सब्जी बेचना तथा अमीर वर्ग के घरों में घरेलू कामकाज करती थी। पुरुषों की तुलना में महिलाओं को कम वेतन दिया जाता था।
3. फ्रांस में कुछ महिलाएं वेश्यावृत्ति से भी अपना जीवन निर्वाह करती थी।
4. फ्रांस में अधिकांश महिलाओं को पढ़ने लिखने का अवसर नहीं मिलता था।
5. कुलीन वर्ग की लड़कियां और महिलाएं स्कूल कॉलेज में पढ़ती थी।
6. तीसरे इस्टेट के अमीर घर की महिलाओं को पढ़ने का अवसर प्राप्त था।
7. अधिकांश महिलाओं को व्यवसायिक प्रशिक्षण का अवसर नहीं मिलता था।
8. कामकाजी महिलाओं को घर की खाना-पीना की व्यवस्था करना तथा बच्चों का लालन-पालन करना पड़ता था।

क्रांति के बाद फ्रांस में महिलाओं की दशा

1. फ्रांस में सरकारी विद्यालय खोले गए तथा लड़कियों के लिए स्कूली शिक्षा अनिवार्य कर दिया गया। क्रांति के दौरान महिलाएं राजनीतिक अधिकार की मांग की परंतु यह अधिकार क्रांति बाद भी नहीं मिला।
2. क्रांतिकारी सरकार ने महिलाओं के जीवन में सुधार लाने के लिए कानून बनाए।
3. फ्रांस में तलाक को कानूनी रूप दिया गया।
4. फ्रांस में विवाह को स्वैच्छिक अनुबंध माना गया।
5. फ्रांस में नागरिक कानून के तहत विवाह का पंजीकरण किया जाने लगा।
6. फ्रांस में महिलाएं व्यवसायिक प्रशिक्षण लेने लगी और अपना व्यवसाय भी करने लगी थी।
8. कानून बनाकर महिलाओं को राजनीतिक गतिविधि पर रोक लगा दिया गया। 1791 के संविधान में महिलाओं को फ्रांस में निष्क्रिय नागरिक

© JCERT not to be republished

का दर्जा दिया गया। इससे महिलाएं निराश हो गई।

दास प्रथा का उन्मूलन

1. फ्रांसीसी उपनिवेश में दास प्रथा का अंत जैकोबिन शासन की क्रांतिकारी सामाजिक सुधारों में से एक था।
2. दास प्रथा एक बुरी प्रथा थी जिसमें लोगों को उनकी मर्जी के खिलाफ काम करने के लिए बाध्य किया जाता था।
3. दास प्रथा की शुरुआत 17वीं सदी में फ्रांसीसी व्यापारी शुरू किए थे।
4. फ्रांसीसी सौदागर बोरदे या नान्दे पर बंदरगाह से अफ्रीका तक जहाज ले जाते थे और वहां से दासो को खरीद लेते थे।
5. ये दास अफ्रीका के नीग्रो प्रजाति से थे। दासो को खरीदकर, दागकर और बेड़ियों में जकड़ दिया जाता था।
6. अटलांटिक महासागर पार करके कैरेबियाई देशों में बागान मालिकों को दासो को बेच दिया जाता था।
7. दासो के श्रम के बल पर फ्रांसीसी व्यापारी यूरोप में समृद्ध नगर बसाने में सफल रहे।
8. 18 वीं सदी में फ्रांस में नेशनल असेंबली ने दास प्रथा की निंदा की परंतु दास प्रथा के उन्मूलन के लिए कोई कानून नहीं बनाया गया।
9. 1794 ईस्वी में फ्रांस में जैकोबिन शासन ने दास व्यापार पर रोक लगाने का कानून पास कर दिया।
10. 1794 ईस्वी में बनाया गया कानून बहुत कम समय के लिए लागू रहा।
11. 10 वर्ष बाद नेपोलियन ने पुन: दास प्रथा फ्रांस में लागू कर दिया।
12. दासो के व्यापार से फ्रांस को आर्थिक लाभ हुआ।
13. फ्रांसीसी उपनिवेश से दास प्रथा का अंत पूरी तरह से 1848 ईस्वी में हो गया।

फ्रांसीसी क्रांति और रोजाना की जिंदगी

1. 1789 श्री के फ्रांसीसी क्रांति के बाद क्रांतिकारी सरकार ने कानून बनाकर स्वतंत्रता एवं समानता के आदर्शात्मक मूल्यों को महिलाओं, पुरुषों एवं बच्चों के जीवन में उतारने का प्रयास किया।
2. 1789 की क्रांति के बाद प्रेस की सेंसरशिप समाप्त कर दिए गए।
3. फ्रांस के शहरों में अखबारों एवं पुस्तकों इत्यादि की तेजी से छपाई होने लगी।
4. पुस्तक, अखबार और पर्चा इत्यादि तेजी से देहात और गांव में पहुंचने लगे।
5. गीत संगीत नाटक जुलूस इत्यादि निकालने की छूट दे दी गई।
6. फ्रांस में गीत संगीत नाटक इत्यादि का आयोजन खूब होने लगा।
7. सहमति और असहमति से संबंधित विचार प्रिंट मीडिया द्वारा छपा जाने लगा।
8. महिलाओं बच्चों और पुरुषों के जीवन में कई बदलाव आए।
9. लोगों के पहनावा रहन सहन और आम लोगों के बोलचाल की भाषा में भी कई बदलाव आए।

© JCERT not to be republished

स्मरणीय तथ्य

1. फ्रांस में घट रही हर घटनाओं का प्रेस में वर्णन होने लगा।
2. परस्पर विरोधी विचारों का प्रचार-प्रसार करने की स्वतंत्रता मिली।
3. विचारकों एवं दार्शनिकों के सिद्धांतों का प्रचार प्रसार होने लगा।
4. अधिकारों के घोषणा पत्र में भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को मनुष्यों का मौलिक अधिकार घोषित कर दिया गया।

स्मरणीय तथ्य

- फ्रांस में फ्रांस की क्रांति के समय बुर्बो वंश का शासन था।
- इस वंश का पहला शासक लुई 14वाँ था।
- लुई सोलहवां का कार्यकाल-1774 ई. से 1793 ई. तक।
- 1789 ईस्वी में फ्रांस का राजा लुई सोलहवा था। लुई सोलहवां का विवाह ऑस्ट्रिया की राजकुमारी मेरी एन्तवाएनेत से हुई थी।
- फ्रांस के क्रांतिकारियों ने 14 जुलाई 1789 ई. को फ्रांस के बास्तील किला को ध्वस्त करके उसमें कैद क्रांतिकारियों को आजाद करा दिए थे।
- 1789 की क्रांति के समय समाज तीन भागों में विभाजित था-प्रथम इस्टेट, द्वितीय इस्टेट एवं तृतीय इस्टेट।
- प्रथम इस्टेट-पादरी वर्ग
- द्वितीय इस्टेट -कुलीन वर्ग
- तृतीय इस्टेट -जनसाधारण वर्ग-किसान मजदूर शिल्पी कारीगर शिक्षित मध्यमवर्ग।
- शिक्षित मध्यमवर्ग - साहित्यकार, लेखक, कवि, दार्शनिक डॉक्टर, इंजीनियर इत्यादि।
- मान्टेस्क्यु-यह एक महान विचारक था। इसने अपनी पुस्तक एस्प्रीट ऑफ लॉज में शक्ति के पृथक्करण का सिद्धांत दिया है। इस सिद्धांत के अनुसार शक्ति का विभाजन कार्यपालिका न्यायपालिका और विधायिका में किया गया है।
- रूसो ने अपनी पुस्तक सोशल कॉन्ट्रैक्ट में सामान्य इच्छा का सिद्धांत दिया है। रूसो प्राकृतिक स्वतंत्रता का समर्थक था।
- रूसो कहता है किस शासक को जनता के प्रति उत्तरदाई होना चाहिए।
- वाल्टेयर चर्च तथा राज्य की बुराई की आलोचना किया है।
- वाल्टेयर अपने आत्मा

निर्णय के सिद्धांत में कहता है कि शक्ति जनता के हाथों में होनी चाहिए।

- फ्रांसीसी उपनिवेश में दास प्रथा का अंत 1848 में कर दिया गया था।
- फ्रांस में आतंक राज्य के संस्थापक राबेस्पेयर था।
- फ्रांस में आतंक राज 5 सितंबर 1793 से 27 जुलाई 1794 तक रहा था।
- जुलाई 1794 ईस्वी में न्यायालय द्वारा दोषी घोषित करके गिलोटिन पर राबे स्पेयर चढ़ा दिया गया था।

© JCERT not to be republished

- फ्रांस का क्रांति पुत्र नेपोलियन बोनापार्ट को माना जाता है।
- नेपोलियन का जन्म कोर्सिका द्वीप में 15 अगस्त 1769 को हुआ था और मृत्यु 5 मई 1821ई. को संट हेलेना द्वीप पर हुआ था।
- नेपोलियन 1799 से लेकर 1804ई. तक प्रथम कान्सल के रूप में फ्रांस में काम किया था।
- नेपोलियन 1804 ई. से 1814 तक फ्रांस का सम्राट बन रहा था।
- नेपोलियन 1815ई. के वाटरलू के युद्ध में ब्रिटेन के हाथों पराजित हुआ था।
- 1789 की फ्रांसीसी क्रांति की उपज थी- समानता, स्वतंत्रता और भाईचारा का नारा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. फ्रांस में आतंक राज्य की स्थापना किसने किया था?

a. मीराबो b. रॉबेस्पेयर
c. नेपोलियन d. रासपुतिन

प्रश्न 2. क्रांतिकारियों ने फ्रांस के पास तिल के किले को कब तोड़ दिए थे?

a. 14 जुलाई 1789 ई.
b. 15 जुलाई 1789ई.
c. 16 जुलाई 1789ई.
d. 17 जुलाई 1789 ई.

प्रश्न 3. फ्रांस के राजा लुई सोलहवा को फांसी की सजा कब दी गई थी?

a. 1792 ई. b. 1793 ई.
c. 1794ई. d. 1795 ई.

प्रश्न 4. फ्रांस के शिक्षित मध्यम वर्ग का संबंध किस इस्टेट से था?

a. प्रथम स्टेट
b. द्वितीय इस्टेट
c. तृतीय इस्टेट
d. इनमें से कोई नहीं।

प्रश्न 5. शक्ति के पृथक्करण का सिद्धांत किसने दिया था?

a. वाल्टेयर
b. रूसो
c. मान्टेस्क्यू
d. इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 6. फ्रांस की क्रांति के समय फ्रांस का राजा कौन था?

a. लुई -14वा
b. लुई -16वा
c. लुई -17 वा
d. इनमें से कोई नहीं।

प्रश्न 7. लुई सोलहवां की पत्नी का क्या नाम था?

a. सोफिया
b. मारिया
c. मेरी एनत्वाएनेत
d. इनमें से कोई नहीं।

प्रश्न 8. वर्साय का महल कहां पर स्थित था?

a. फ्रांस में
b. जर्मनी में
c. ब्रिटेन में
d. इनमें से कोई नहीं

© JCERT not to be republished

प्रश्न 9. प्रथम इस्टेट का संबंध था?

a. पादरी वर्ग से

b. कुलीन वर्ग से

c. जनसाधारण वर्ग से

d. इनमें से कोई नहीं।

प्रश्न 10.द्वितीय इस्टेट का संबंध किससे था?

a. पादरी वर्ग से

b. कुलीन वर्ग से

c. जनसाधारण वर्ग से

d. इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 11.लुई सोलहवा का विवाह किस देश के राजकुमारी से हुआ था?

a. फ्रांस b. जर्मनी

c. ब्रिटेन d. ऑस्ट्रिया

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. फ्रांस में आतंक राज्य की स्थापना कब और किसने किया था?

उत्तर - फ्रांस में आतंक राज्य की स्थापना रॉबेस्पेयर द्वारा 5 जुलाई 1793ई. को हुआ था। यह आतंक राज्य 5 सितंबर 1793 ई. से 27 जुलाई 1794 तक रहा था।

प्रश्न 2. मॉन्टेस्क्यू के शक्ति के पृथक्करण सिद्धांत को स्पष्ट करें?

उत्तर - मॉन्टेस्क्यु ने अपनी पुस्तक स्प्रिट ऑफ लॉज में शक्ति के पृथक्करण सिद्धांत का वर्णन किया है। इस सिद्धांत के अनुसार शक्ति का विभाजन तीन भागों में किया जाना चाहिए-कार्यपालिका शक्ति, न्यायपालिका शक्ति और विधायिका शक्ति। विधायिका का कार्य कानून बनाना, कार्यपालिका का काम कानून को लागू करना तथा न्यायपालिका का कार्य कानून की व्याख्या करना।

प्रश्न 3. 1789 की फ्रांसीसी क्रांति के समय के सामाजिक व्यवस्था पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर - 1789 के फ्रांस की क्रांति के समय फ्रांस का समाज तीन भागों में बिभाजित था-प्रथम इस्टेट द्वितीय इस्टेट एवं तृतीय इस्टेट। प्रथम इस्टेट में पादरी वर्ग तथा द्वितीय इस्टेट कुलीन वर्ग तथा तृतीय इस्टेट में जनसाधारण वर्ग के लोग आते थे। कुलीन वर्ग और पादरी वर्ग को विशेषाधिकार प्राप्त था जबकि जनसाधारण वर्ग विशेषाधिकार से वंचित थे। जनसाधारण वर्ग में ही शिक्षित वर्ग था। इस शिक्षित वर्ग में लेखक, कवि, साहित्यकार, दार्शनिक डॉक्टर, इंजीनियर इत्यादि थे। रूसो वाल्टेयर और मान्टेस्क्यू जैसे लोगों ने फ्रांस के जनसाधारण वर्ग को क्रांति के लिए अपनी लेखनी के माध्यम से प्रेरित किया था। 1789 के फ्रांस की क्रांति की पृष्ठभूमि शिक्षित मध्यमवर्ग ने ही तैयार किया था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. फ्रांस की क्रांति को किन किन कारकों ने जन्म दिया था? विस्तार से लिखें।

उत्तर - 1789 के फ्रांस की क्रांति को जन्म देने वाले निम्नलिखित कारण थे-

1. सामाजिक कारण

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

© JCERT not to be republished

2. राजा का निरंकुश और अत्याचारी शासन
3. लुई सोलहवां की अयोग्यता
4. मेरी एन्तवाएनेत की फिजूलखर्ची
5. कुलीन वर्ग और पादरी वर्ग द्वारा विशेषाधिकार का उपभोग करना
6. जनसाधारण एवं शिक्षित मध्यम वर्ग को विशेषाधिकार से वंचित रखना
7. कुलीन वर्ग और पादरी वर्ग द्वारा कर अदायगी नहीं करना।
8. जनसाधारण पर कर का बोझ होना
9. सभी उच्च पदों पर कुलीन वर्ग और पादरी वर्ग के लोगों को नियुक्त करना

© JCERT not to be republished